

Pankaj Kumar

1 (c) प्रदत्तावना के ~~प्रमुख~~ ^{प्रमुख} जाहरी छोड़ भारत की अर्थव्यवस्था
और इसकी दृष्टि से विकास की प्रकृति की बीच संतोष
का आवेदनालूक संक्षेप में

Ans:

भारतीय संविधान की प्रदत्तावना भारत को ~~एक~~ संघ प्रमुख राष्ट्र के रूप में प्रदत्त करती है। ऐसे एक संघ प्रमुख राष्ट्र के रूप में किसी भी राष्ट्र की संप्रमुख वाहन राज्य, उसका आधिक, विधानीक, शासकीय संघान, और अप्राप्यता नहीं है।

[भारतीय संविधान भारत की राजनीति, अवस्था और आज्ञा का एक रूप द्वारा दर्शाया गया है। इसका उल्लंघन अवश्यक नहीं है, लेकिन इसका प्रत्यावर्तन करना चाहिए।]
भारत को एक संघ प्रमुख राष्ट्र विधित करती है तो उसका
~~not needed in short question~~

(i) भारत अपने आंतरिक और बाह्य नीतियों को विचारित करने के लिए सूर्ण रूप की जरूरत है।

(ii) इन नीतियों को दोष बाह्य शास्त्रीय प्रयोग का अधिकारी नहीं करना चाहिए।

(iii) ~~विधान~~ इन नीतियों के विवरण, विधानी, विधान विधायाली राजिले ~~शुल्क~~

(iv) भारत अपने आधिक नीति को विचारित करने के लिए रूप की जरूरत है। यही उत्तरांग तो जीवन, विज्ञान विश्व के प्रयोग

~~हृषि विना, तो पुर्ण कृप से उत्तीर्ण की अपेक्षा अस्ति
तो ही पुर्ण कृप से उत्तीर्ण की अपेक्षा अस्ति। एवं अपने अपेक्षा
की अत्यधिक दिलासा उत्तीर्ण की अपेक्षा।~~

(v) वही वास्तविक है कि भारत की सभ्यता वही
संयुक्त दृष्टि और विश्वास की प्रतीक है और वही विजयी है
जिसे अपनी आवश्यकता के अनुसार इसे बदल के कुछ
कुछ प्रथाओं की लिया गया है।

~~लौट इसे विजयी करो~~

मुझे ही, जहां तुमने अपेक्षित अस्ति की अपेक्षा
होता है, वही भी हम अपनी अपेक्षित अस्ति की वाहनी
की बाध्य प्रसार के लिए द्वारा तो प्राप्त रही तरीके
सबला है ~~जो अपेक्षा~~—

(i) ~~मुत्त अपेक्षित अस्ति की अपेक्षा अपेक्षित है।~~
~~मैं नहीं हूँ।~~

(ii) ~~आप. मैं. मैं (IMP) विषय की है, विषय विवरण विवरण
जीवी विवरण विवरण हैं। जीवी विवरण विवरण है।
प्रवृत्ति की विवरण विवरण है। जीवी विवरण विवरण है।
प्रवृत्ति की विवरण विवरण है। जीवी विवरण विवरण है।~~
~~प्रवृत्ति की विवरण विवरण है। जीवी विवरण विवरण है।~~

(iii) ~~राजनीति की है। विजय की अपेक्षा, विजय की
जीवी अपेक्षा विजय की अपेक्षा, विजय की अपेक्षा
विजय की अपेक्षा, विजय की अपेक्षा, विजय की अपेक्षा,~~
~~विजय की अपेक्षा, विजय की अपेक्षा, विजय की अपेक्षा,~~

(iv) मानने की लोगों द्वारा बोलिया गया तो उनका अनुभव इसकी
वल्लुक वाहन कारबोंडी की भी प्रमाणित हो जाती है।
उदाहरण के लिए मानने वाले WTO विवादों की
पुरा कारबोंडी के लिए लूपी फ़िल्डिंग इवेंट अन्य सम्पर्क
का है, तो यहां है विवाद इसी अन्य
विवादों पर आधारित होता है जो कि नहीं है।

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि,

मानने वाले विवाद कारबोंडी जिसकी आवश्यकी और प्राप्तीकी
विवादों के बाहर रखे जाते हैं। इनकी विवादों की प्रमाणित
भी होती है। लैंगिक विवादों की संपत्ति इसके बाहर रखते हैं।
कृषि और निवासी विवादों की विवादों की विवादों की
संपत्ति (जैविक संपत्ति) जिसकी विवादों की विवादों की

5/10

5/10

3/10

2/10

5/10

3/10

2/10

ignore

26) प्रस्तावना में उल्लिखित आदर्श - साध, स्वतंत्रता, सुधारा आदर्श
वंचुले कड़-हृदयों पर निर्भर हैं। इनमें से इन आदर्शों की
प्रति भी सीधा का आलोचनात्मक विवाहित रखें।

मानवीय संविधान ने प्रस्तावना तक आदर्शों की उद्धृतियाँ
की हैं जो अधिक समृद्धि नहीं हैं। जो प्रबल सिद्धान्त
हैं। उन आदर्शों के - साध, स्वतंत्रता, सुधारा आदर्श वंचुले।

~~Can be made better~~
इन आदर्शों की संविधान से
साधारण साधारण संविधान निर्मित है। जो मानवान्मा
उन आदर्शों के साधारण साधारण संविधान की वारत्पान्नी सिद्धा है।

① साध : साध का अर्थ है प्रत्येक व्यक्ति को उनके अधिकारी
के अनुसार उनकी विधियों के अनुसार उनके काम को हेतु
प्रबल रूप से।

प्रस्तावना के तीन पक्षों पर साध की वर्णन हैं -
आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक - साध।

(i) स्वतंत्रता :- स्वतंत्रता का अर्थ है, मुस्तिष्ठत निवेदन के
साथ, प्रत्येक व्यक्ति को नियंत्रण अभियासित अनुद
कार्य करने की स्वतंत्रता।

(ii) सुधार :- सुधार का अर्थ है सभी व्यक्तियों को,
सामाजिक, आर्थिक आ राजनीतिक पृष्ठभूमि को पर्याप्त
सुधार अधिकार और अवसर प्रदान करना।

(iv) बंधुत्वः— प्रश्नाकारा द्वे वाचित बंधुत्व एवं उद्देश्य हैं
प्रश्नियाँ और सम्प्रयोगी के बीच आपसी सहाय
की बढ़ावा हैं।

- पर लिखें हैं क्योंकि—
- (अ) न्याय के विभिन्न विधानों प्राप्त नहीं की गई जानकारी है।
 - (ब) प्रश्नियों की संतरणता के बिना सभला ज्ञापित बोली की गई जानकारी है।
 - (ग) साधारणता, आर्थिक, राजनीतिक समस्ता के बिना बंधुत्व की अवधारणा विविधता नहीं की गई जानकारी है।
 - (द) भारत के क्षेत्री समुदायों द्वे बंधुत्वे के बिना आर्थिक, साधारणता एवं राजनीतिक न्याय नहीं प्राप्त की गई जानकारी है।

Justice

मध्यम में, प्रश्नाकारा द्वे वाचित इन आदर्शों की प्राप्त उड़ी ही गुरु द्वे वाचित इन विविधता के बीति निर्देशित तरीके।

(१) न्याय, जो भारतीय संविधान के बीति निर्देशित तरीके। अन्तर्गत इस ग्रन्थ की गया है। न्याय की भूमि अपेक्षा एवं गति है जो बीति निर्देशित तरीके द्वे वाचित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये प्रयत्न उड़ी।

प्रेरित बीति निर्देशित तरीके में शापिल न्याय वाचन के लिये बाध्यकारी (१८) होनिस्ट्स

(ii) इनमा तर्क लगाये कि प्राप्त होने वाला जा सकता है

(iii) 'सुप्तता', प्रौढ़ आव्यूही के अन्तर्गत अक्टूबर-19 से 22

इस तथा अक्टूबर 25-28 के घाँटों के दौरान तक त्रिपुरा के देशी अल्पसंखित हैं, अत भाषालय के बाहरी दौरा त्रिपुरा की नियमिती है जो लोगों के दृष्टिकोण के दृष्टिकोण के

इनमा आप जनपालप तक त्रिपुरा के दृष्टिकोण के पूर्ण रूप से हैं,

(iv) 'सुप्तता' : मात्रिक दृष्टिकोण के अक्टूबर-14-18 के समय

के अव्यूह विनायक रामायण/ इन अव्यूहों के

ही दृष्टिकोण के अक्टूबर 32 तक 226 के अक्टूबर

सुमाहित जनपि/मध्यम/द्वितीय शीर्षक/प्रावाचन-भाषालय

तथा उत्तर भाषालय जो दृष्टता है

सुनिश्चालित प्रश्नावारी तथा व्यापलय

वा छुटका की के विषय अस्तित्व/ छोड़ा छोड़ा गया है

कृपया दृष्टि के दृष्टिकोण

(v) 'सुप्तता' :- प्रौढ़ उत्तरी के दृष्टिकोण के अवधारणा के

सुमाहित रूप गया है/ इसांति प्रौढ़ उत्तरी

के दृष्टिकोण के अवधारणा के दृष्टिकोण में विवरण दिया है/

इस अवधारणा के अवधारणा ही है/

इस व्यापक से अनेक

अभियानों पर इसके द्वारा अधिक ज्ञान और विचार का उत्पन्न हुआ।
इसी प्रारूप के बिना इनमें से कोई अद्वितीय विचार नहीं आया।
प्रारूप के विचार का फल यह है। साथ ही, इसके द्वारा अनेक विचारों का विवरण दिया गया है। इसके द्वारा एक विचार के लिए विभिन्न विचारों का विवरण दिया गया है।
प्रारूप के विवरण का विवरण है।

(26) प्रत्यावर्ती में विविध 'विश्वास' की अवधारणा की गयी। विश्वास
में अन्य विवरणों के अनुसार इसी गति है। यह गति विश्वास
के द्वारा द्वारा द्वारा होती है। इसी गति के अन्तर्गत विश्वास की गति
आवश्यकता के विवरण की है।

सार्वत्रीप द्वारा विविध विवरण की गति है। यह गति विश्वास
के द्वारा द्वारा होती है। यह गति विश्वास की गति है।
विश्वास की गति है, इस विश्वास की गति है।
विश्वास की गति है, इस विश्वास की गति है।

मार्गीन शाह योगदान द्वारा

अन्य विवरण के अन्य विवरण की गति विश्वास की
विश्वास की अवधारणा की विवरण की गति है।
विश्वास की विवरण की गति है।

(i) विश्वास की अवधारणा सामाजिक विवरण की अवधारणा की
विवरण की गति है। यह गति विवरण की गति है। यह गति
विवरण की विवरण की गति है।

(ii) विश्वास की विवरण की विवरण की विवरण की
परिवर्ती विवरण की विवरण की विवरण की विवरण की

छटे जाते हैं।

(iii) सरकारी कर्ता नहीं बिल्डिंग नहीं प्राप्त करते हैं
जो देश में लोग जाता है। जिससे जाति व जन-
धारिक सुविकल्प इनमेंपाना जल्दी होता है।
जिससे बच्चे अद्यते होता है।

(iv) अभी बिल्डिंग के लिए नागरिकों जिम्मेदारी की
बनाते हुए देश में ऐसा जाता है। जिससे
बच्चे, भाका, अद्यते होते हैं।

भारत में विविधता है। इसके
तथा बच्चों के अनुवासन है। लौटी इन्हें कुछ
उत्तराधिकारी का ना भावना उन्होंने पढ़ता है जो
जिससे होता है -

(5) शायाचित्र सुविकल्प: जाति और जाति आवाज़ों
प्रतिवादी।

(6) खूले आवाज़ों अपनाएँ:- आवाज़ों की दृष्टि
सुन्दरी के द्वारा बदलवाना।

(7) नागरिक जिम्मेदारी बोले हैं कि वही तथा विकास
की शायाचित्र सुविकल्प है जो जल्दी है।

इन चुनावोंमें १९७८ —

① बंगला के आपानी राजनीतिक दल से बोल-झट
कर दी।

(ii) बड़ी द्वारा, पद्मा विलास, पात्रिकार, अव्याख्यान
कालिंग इत्यादि, वे दिग्भिनी ने उपर्युक्त
जाति के लिए भारत के बंगला व आवास
पर्याप्त करने के विकास के लिए।

इस चुनियों के १९७८ भारत के बंगला
व आवास भारत के बिहार, बंगला आदि
अव्याख्या भारत के बिहार बंगला आदि
अव्याख्या भारत के बिहार बंगला आदि